विषय-सूची

पृष्ठ सं.

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय — १—३२

मिथक और यथार्थ

(क) मिथकों की निर्मिति

(i) इतिहास

(ii) रूपक

(iii) आख्यान/निजंधरी कथा

(iv) फैंटेसी

(v) स्वप्न

(ख) मिथक और यथार्थ का अंतर—संबंध

(ग) मिथकों का काव्य में रचनात्मक विनियोग

(घ) मिथक और यथार्थ; संदर्भ समकालीन हिन्दी कविता

द्वितीय अध्याय — ३३—७२

'चक्रव्यूह' एवं अन्य रचनाओं का अनुभव संसार और मिथक तत्त्व

(क) चक्रव्यूह (१९५६)

(ख) तीसरा सप्तक (१९५९)

(ग) परिवेश; हम तुम (१९६१)

तृतीय अध्याय — ७३—१०४

'आत्मजयी' की मिथकीय चेतना

(क) आत्मजयी में जीवन और मृत्यु के शाश्वत प्रश्न

(ख) कठोपनिषद् में वर्णित यम और नचिकेता आख्यान का आत्मजयी में मिथकीय विनियोग

(ग) आत्मजयी में अस्तित्ववादी चेतना और मिथकीय स्मृति

चतुर्थ अध्याय

'आत्मजयी' के बाद की कृतियों में मिथकीय चेतना १०५–१५७

(क) काव्य–(i) अपने सामने (१९७९)

(ii) कोई दूसरा नहीं (१९९३)

(iii) इन दिनों (२००२)

(iv) वाजश्रवा के बहाने (२००८)

(ख) निबंध

(ग) साक्षात्कार

पंचम अध्याय १५८–२०५

कुँवरनारायण के काव्य में मिथकीय संयोजन एवं काव्यदृष्टि :

उपखण्ड –(i) मिथकीय संयोजन

(क) बिम्ब विधान

(ख) प्रतीक विधान

(ग) आधार स्रोत एवं अर्जित अनुभव

उपखण्ड –(ii) काव्य दृष्टि

(क) आधुनिकताबोध और मिथकीय चेतना का औचित्य

(ख) प्रदत्त समाज, पाठक और समकालीन जीवन की अभिव्यक्ति

(ग) कविता में मानवीय मूल्यों की स्थापना की केन्द्रीय भूमिका

उपसंहार २०६–२०९

ग्रन्थ अनुक्रमणिका i - iii